शनि रिर्पोट

प्रिय राजेश जी

आपकी शनि रिपोर्ट प्रेषित की जा रही है।

जन्म लग्न: मिथुन

आपके जन्म के समय क्रांतिवृत्त के पूर्वी क्षितिज पर मिथुन राशि उदित हो रही थी इसलिए आपका जन्म लग्न मिथुन है। आपका स्वभाव एवं व्यक्तित्व इस राशि के अनुसार है। यह वायु तत्व राशि है इसलिए आप बहुमुखी एवं सर्वग्राह्य गुणों युक्त हैं। आपके लग्न के स्वामी ग्रहों में राजकुमार (युवराज) बुध हैं इसलिए आप प्रखरबुद्धि के धनी हैं और आप मन में आने वाले विचारों पर तुरंत अमल करते हैं। अपनी इस अधीरता के कारण आप अधिकांशत: कई कार्यों, योजनाओं में व्यस्त रहते हैं और सभी कार्यों पर एक साथ ध्यान नहीं दे पाते। आप कार्यों को बीच में ही छोड़कर अलग हो जाते हैं। वाक् चातुर्य एवं सम्प्रेषण कलाओं में आप उत्कृष्ट हैं। आपको अपने बुद्धि कौशल एवं अभिव्यक्ति की श्रेष्ठ क्षमता का लेखनी के माध्यम से प्रदर्शन करना चाहिए। आप एक सफलतम लेखक भी बन सकते हैं। यदि आप आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख हों तो आप इस विषय की गहराई तक जा सकते हैं और इस जटिल विषय की सिद्धस्तता से व्याज़्या कर सकते हैं।

आपकी बहुमुखी प्रतिभा आपको कई क्षेत्रों में प्रसिद्धि दिलाती है, आप विषयों को शीघ्रता से समझ लेते हैं तथा आप हंसमुख एवं विनोदप्रिय हैं। आप तकनीकी मानसिकता के हैं और प्राय: संवदेनशील नहीं रहते। आप भावनात्मक होने की अपेक्षा व्यावहारिक एवं विवेकशील हैं। आपकी स्त्री राशि है जो कोमलता देती है इसीलिए आप कठोर शारीरिक श्रम भी नहीं कर सकते। निठल्ले बैठना आपके लिए अभिशाप है और आप सदैव कुछ न कुछ संभव कार्य करने में व्यस्त रहते हैं। मिथुन द्विस्वभाव राशि है। यह द्विस्वभाविकता आपके व्यवहार एवं कार्यप्रणाली में झलकती है। जरूरत पड़ने पर आप उस व्यक्ति से भी प्रगाढ़ता बना लेते हैं जिसे सबसे घृणित समझते थे। आपकी राशि के जुड़वा प्रतीक चिह्न भी इसकी पुष्टि करते हैं। उत्तरदायित्व और समायोजन की महत्वपूर्ण क्षमता होने के उपरांत भी कई बार आप चिंतित और निराश हो जाते हैं। अपने कार्यों को चारों ओर फैला देने के कारण कई बार आपकी दिनचर्या अव्यवस्थित हो जाती है। यदि आप अपने स्वभाव में व्याप्त ऐसी भ्रांति और अस्थिरता पर नियंत्रण पा लें तो आप अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

रुड़याल किपलिंग, अल्बर्ट आइन्सटीन, अमृता प्रीतम, महाकवि मैथिली शरण गुप्त, मोरारजी देसाई, प्रियंका गांधी, स्टेफी ग्राफ, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, दयानंद सरस्वती आदि महान व्यक्तित्व इसी लग्न में जन्मे थे।

जन्म नक्षत्र: अनुराधा

अनुराधा कृष्ण की प्रेयसी हैं। यह नक्षत्र आकाश में भगवान को भेंट अर्पित करते हुए पंक्तिबद्ध रूप से दृष्टिगोचर होता है। आप संबंधों में संतुलन व सज़्मान बनाए रखना जानते हैं। आप दिव्यदृष्टि से युक्त हैं और बनावटी बातों के बीच सत्य का पता लगा लेते हैं। इस नक्षत्र का प्रतीक चिन्ह 'कमल पुष्प' है। आपको अपने सिद्धांतों से विचलित कर पाना बहुत कठिन है चाहे कैसी भी विषम परिस्थितियां क्यों न आ जाएं। जीवन के घोर प्रतिकूल समय में भी आप आशावादी बने रहते हैं। मंगल और शनि इस नक्षत्र से संबंधित हैं। आप जिज्ञासु और मर्म जानने के इच्छुक रहते हैं और देश भूमि और आत्मा से गहन प्रेम करते हैं। आप दूर देश की यात्राओं के शौकीन हैं। आप दूसरों की बुद्धिमता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं और महान लक्ष्यों को प्राप्त करने में दूसरों के साथ जुट जाते हैं। आपके जन्म नक्षत्र का स्वामी देवता मित्र है। आप व्यवहार में मित्रवत एवं सहृदय हैं जिसके कारण आप दूसरों का स्नेह पाते हैं। आप उदारमन, सहयोगी और सकारात्मक सोच के व्यक्ति हैं तथा जीवन के प्रति सकारात्मक सोच रखते हैं। यदि आपको यह पता लग जाए कि आपके

बीच में रहने से मामला सुलझ जाएगा तो आप अपने शत्रु से भी सामंजस्य बिठा लेते हैं। आप अपार तार्किक क्षमता के धनी हैं। सीखने के दृष्टिकोण से आप नवीन को ग्रहण कर लेते हैं और पुराने को त्याग देते हैं। आप सदैव अद्यतन जानकारी रखते हैं। आप मानते हैं कि धीरे-धीरे परन्तु निरन्तर चलने वालों की सदैव जीत होती है। आपके स्वभाव का प्रतिकूल पक्ष है कि आप दूसरों पर हावी रहते हैं और आपके काम करने की शैली भी अलग है। असंतुष्ट रहना भी आपके स्वभाव का दूसरा नकारात्मक पहलू है। यह असंतोष आप को कभी-कभी तनाव और कष्टों में डाल देता है। यदि आप इन नकारात्मक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण कर लेते हैं तो आप प्रतिष्ठित हो सकते हैं और प्रतिष्ठा फैला सकते हैं।

आपकी अभिरुचि के विषय हैं: दर्शनशास्त्र, रहस्य विद्याएं, संगठन, गणित, सांज़्यिकी, अपराधा शास्त्र, अन्वेषण, विदेशी मामलात पेशे आदि। आपका जन्म नक्षत्र वल्लभ भाई पटेल के जन्म नक्षत्र के समान है।

जन्म राशि: वृश्चिक

यह मंगल की राशि है। इसमें चंद्रमा अपनी नीच स्थिति में रहते हैं अर्थात् यह चंद्रमा के लिए शुभ स्थिति नहीं हैं जिस कारण आपको जन्म स्थान से दूर रहना पड़ सकता है अथवा अपने जीवनसाथी या निकट संबंधियों से भी वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। आप उदार मन एवं दूरदर्शी प्रवृत्ति के तथा स्पष्टवादी हैं। आपको अधिक व्यावहारिक बनने के लिए अपनी वाणी में विनम्रता एवं मृदुलता अपनानी चाहिए। यद्यपि आप बुद्धिमान हैं फिर भी आप शॉर्टकट से सफलता प्राप्त करने की होड़ में कभी-कभी अपने लिए समस्या उत्पन्न कर लेते हैं। आपको दूसरों से लेन-देन और कानूनी औपचारिकताओं में अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए अन्यथा सरकारी एजेंसियों की भृकुटियां तन जाती हैं। आपको अपने व्यवहार में सौज़्यता लानी चाहिए क्योंकि आप कई बार चिड़चिड़े एवं क्लांत हो जाते हैं।

आप साहसी हैं परंतु चलने से पूर्व कोई विचार नहीं करते। आपको अपने पूर्ण वेग से कार्य में जुटने से पूर्व सभी पहलुओं पर विचार कर लेना चाहिए। आप सामाजिक आयोजनों में असहज महसूस करते हैं परंतु इसे अपना व्यवसाय बना लें क्योंकि एक अवस्था के बाद जनसामान्य से व्यवहार करने ही पड़ते हैं।

शनि के फल:

इस रिपोर्ट में केवल मात्र गोचर का ही ध्यान नहीं रखा गया है अपितु जन्मकालीन ग्रहस्थिति तथा वर्तमानकालीन दशाक्रम को भी ध्यान में रखा गया है। दशाफल का विवेचन आगे किया जा रहा है।

9 सितज़्बर 2009 की अर्द्धरात्रि में शनिदेव राशि बदल चुके हैं वे आपके जन्म लग्न से चतुर्थ तथा चन्द्र लग्न से एकादश भाव में संचार करेंगे। राशि से ग्यारहवें शनि आर्थिक दृष्टि से लाभदायक रहेंगे और आपके कम प्रयासों में ही अधिक लाभ प्राप्ति के संकेत दे जाएंगे। लग्न से छठे पर शनिदेव का प्रभाव एक ओर आपके विरोधी पक्ष को खत्म करने में मदद करेगा तो दूसरी ओर चन्द्र लग्न पर शनि का प्रभाव अज्ञात भयों को मन में जन्म देगा। लगातार आप इस भावना से ग्रसित रहेंगे कि कहीं न कहीं कोई समस्या मेरे आसपास बनी है। आपके ये सारे भ्रम निराधार साबित होंगे क्योंकि राशि में स्थित चन्द्रमा अनुराधा नक्षत्र में हैं जो स्वयं शनिदेव का नक्षत्र है। यद्यपि गृहकलह प्रधान रहेगी, व्यक्तिगत संबंधों में विवाद बढ़ जाएंगे, विशेष रूप से 17 दिसज़्बर से 2009 से 14 जनवरी 2010 तक का समय आपके धैर्य की परीक्षा का है। इस अवधि में आपको पूर्ण रूप से अपने मन, क्रोध और वाणी तीनों पर संयम बरतना होगा। जरा सी चूक भी बड़ा नुकसान कराने वाली सिद्ध हो सकती है। आपको चाहिए कि इस पूरी अवधि में शनिदेव की निरन्तर उपासना करते रहें। यद्यपि यह उपासना आपको सज़्पूर्ण ढाई वर्ष करनी है परन्तु उपर्युक्त वर्णित समय में विशेष ध्यान रखना होगा। आराधना के लिए शनिदेव के मंत्रों का जाप किया जा सकता है। **ॐ शं शनैश्चराय नमः।**

यदि नौकरीपेशा हैं तो कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की सोचेंगे, स्थान वृद्धि होगी तथा कार्य का विस्तार होगा। साथ ही कुछ ऐसी स्थितियां बनेंगी कि कार्यक्षेत्र में आप पर कोई आरोप भी आएं परन्तु विशेष हानि की संभावना कम है। एक बार पुनः यह सलाह दी जा रही है कि शनिदेव की अधिकाधिक उपासना करें क्योंकि लग्न एवं चंद्र लग्न दोनों पर ही

शनिदेव का दृष्टि प्रभाव है। कई बार मन में निराशा की भावना आएगी, बेचैनी रहेगी परन्तु धैर्य न खोकर और अपने पूरे आत्मबल को समेटकर समय को व्यतीत करें। दूसरी ओर कुछ हद तक सूर्यदेव की आराधना भी आपका आत्मबल बढ़ाने में मदद करेंगी क्योंकि आपकी जन्मपत्रिका में षड्बल में सूर्य और ग्रहों की अपेक्षा कुछ कमजोर हैं जिस कारण कई बार आप अपना आत्मबल खो देते हैं और यह समझ लेते हैं कि परिस्थितियां नियंत्रण से बाहर जा रही हैं जबकि वास्तविकता कुछ और होती है इसलिए अपने मन की विकलता को कम करने के लिए सूर्यदेव की उपासना निज़ मंत्र से किया करें: **ॐ घृणिः सूर्याय नमः।**

यदि व्यापार करते हैं तो भी व्यापारिक विस्तार की योजनाएं क्रियान्वित कर पाएंगे। नए विषयों को जोड़ेंगे। यदि व्यवसाय भागीदारी में है तो समय अवश्य कठिन है और आपको सावधानीपूर्वक यह समय निकालना होगा। किसी भूमि अथवा वाहन के क्रय-विक्रय की योजना बनाएंगे। नए निवेश करेंगे, यह निवेश भूमि अथवा भवन या इनसे संबंधित किन्हीं व्यवस्थाओं पर हो सकता है। इस पूर्ण अवधि में वाहन धीमी गति और सावधानी से चलाएं तथा स्वास्थ्य की ओर से विशेष सावधान रहें। किसी भी प्रकार की लापरवाही हानिकारक सिद्ध हो सकती है। जनवरी 2010 से मई 2010 के मध्य वाहन सावधानी से चलाएं। माता के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

अगस्त 2009 से प्रारम्भ होने वाली शुक्र अन्तर्दशा का विवेचन आगे किया जा रहा है-

(शुक्र-गुरु-शनि 31.08.09 से 01.02.10): इस अवधि में कार्य-व्यवसाय में तो वृद्धि होगी तथा कुछ परिवर्तन के भी संकेत हैं। एक ओर जन्म लग्न से सप्तमेश बृहस्पति में अष्टमेश शनि की दशा है तो चन्द्र लग्न से पंचमेश में तृतीयेश, चतुर्थेश की। इस अवधि में भूमि संबंधी कोई विशेष लाभ होंगे तो दूसरी ओर स्थान परिवर्तन की भी संभावना है। छोटी-मोटी आर्थिक हानि हो सकती है जिसके लिए आप विशेष चिंतित न हों क्योंकि मारक ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा में इस प्रकार की घटनाएं स्वभाविक रूप से आती रहती हैं। चन्द्र लग्न से पंचमेश की दशा और जन्म लग्न से भी पंचमेश की दशा पद में तो वृद्धि चाहती है परन्तु व्यक्तिगत जीवन में कुछ कठिनाइयां, विवाद और आक्षेप भी आ सकते हैं। आपको समय को धैर्यपूर्वक निकाल जाना होगा।

(शुक्र-गुरु-बुध 01.02.10 से 19.06.10): इस अवधि में आत्मविश्वास बढ़ेगा, यद्यपि बुध केन्द्राधिपति दोष से पीड़ित हैं फिर भी चतुर्थ स्थान में अपनी ही राशि में स्थित होने से लाभ की मात्रा को बढ़ा देंगे, वाहन संबंधी नया निर्णय लेंगे परन्तु माता के स्वास्थ्य के लिए समय थोड़ा कष्टकर हो सकता है। मातृ तुल्य किसी व्यक्ति को भी कष्ट अथवा पीड़ा हो सकती है। संभव है कि घर में किसी को शल्य चिकित्सा की सलाह भी मिल जाए और दवाइयों पर आपका खर्च हो। भूमि पर कुछ निवेश के संकेत भी हैं।

(शुक्र-गुरु-केतु 19.06.10 से 15.08.10): इस अवधि में मन में उच्चाटन के भाव रहेंगे और आप परिस्थितियों से पलायन की सोचने लगेंगे। ध्यान रहे कि पलायन किसी भी समस्या का हल नहीं होता अपितु समस्या का हल आपसी विचार-विमर्श करके निकाला जा सकता है, चाहे वह व्यक्तिगत स्तर पर लें अथवा मित्रों की सलाह हो या फिर हितैषी और विषय विशेषज्ञ रिश्तों को संभालने और संवारने में मदद करें। इन सभी समस्याओं से कोई बड़ी हानि नहीं होगी क्योंकि बृहस्पति देव लगातार अनुकूल बने हुए हैं। कुंभ राशि में रहते हुए अप्रैल-मई तक वे परिस्थितियों को संभालने में आपकी मदद करेंगे तो मई 2010 में स्वयं की राशि में आकर लोकप्रियता में वृद्धि करेंगे, सुखों में वृद्धि करेंगे और व्यक्तिगत समस्याओं को हल करने में भी बड़ी भूमिका निभाएंगे। विशेष रूप से इस बात का ध्यान आपको रखना होगा कि किसी भी प्रकार के आरोप आने पर भागने की बजाए स्पष्टीकरण देकर स्थितियों को अपने पक्ष में कर लें।

जैसा कि ऊपर वर्णित किया गया है कि शनिदेव की निरन्तर उपासना आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगी। शनिदेव के निमित्त दान करें, मंत्र जाप करें तथा गरीब व जरूरतमंद लोगों की अधिकाधिक सहायता करें तो विशेष लाभ प्राप्त होगा।

यह विश्लेषण बिना आयु निर्णय के किया गया है।